Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **14.08.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

मेहमान के लिए व्यवस्था उपलब्ध करना तथा उसका मान सम्मान करना और उसे प्रत्येक कठिनाई से बचाना प्रत्येक कारकुन का कर्त्तव्य है। जिनके घरों में मेहमान आ रहे हैं उन्हें भी चाहिए कि रात को व्यर्थ की बातों में समय व्यतीत करने के बजाए अधिकाधिक समय इन दिनों में अल्लाह तआला और उसके रसूल के ज़िक्र में व्यतीत किया जाए, नेकी की बातें की जाएँ तथा नेकी की बातें सिखाई जाएँ।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अगले जुम्अः से जमाअत-ए-अहमदिया बर्तानिया का जलसा सालाना आरम्भ हो रहा है इन्शाअल्लाह। जलसे की तय्यारी के लिए कुछ सप्ताह से स्वयं-सेवक कार्यकर्ता हदीक़तुल मेहदी जा रहे हैं तथा पिछले सप्ताह या दस दिनों से तो सम्पूर्ण रूप से ख़ुददामुल अहमदिया एंव शेष कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। जंगल में जलसे के आयोजन के लिए समूचे प्रबन्ध करना कोई छोटी बात नहीं है परन्तु हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले ख़ुददाम तथा स्वयं-सेवक इतनी दक्षता से यह कार्य करते हैं कि जिसका उदाहरण दुनिया में किसी अन्य स्थान पर दिखाई नहीं देता तथा किसी ज़ी संगठन में हम यह नहीं देख सकते।

अतः यह भी अल्लाह तआला की कृपा से वह भावना है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के बाद अल्लाह तआला ने नौजवानों तथा काम करने वालों में पैदा की है। बारिश हो या धूप हो, ये नौजवान इन बातों से निश्चिंत होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जारी इस जलसे के लिए हर समय निःस्वार्थ होकर यह काम कर रहे हैं और तय्यारी कर रहे हैं और फिर जलसे के दिनों में और अधिक हज़ारों कार्यकर्ता मेहमानों की सेवा तथा जलसे के प्रबन्ध को सुन्दर रूप से चलाने के लिए अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करते हुए आ जाएँगे तथा फिर उसके पश्चात भी इस काम को समेटने के लिए तथा सुरक्षित करने के लिए सारे सामान को, फिर एक लम्बे समय तक काम करना पड़ता है। उन काम करने वालों में इन्शाअल्लाह पुरुष भी होते हैं जो आएँगे अथवा कर रहे हैं, महिलाएँ भी हैं, लड़के भी हैं, लड़कियाँ भी हैं, बच्चे और बूढ़े भी हैं।

अतः यह असाधारण भावना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा की है जो हमें आज केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर नज़र नहीं आती। इन पश्चिमी देशों में जहाँ दुनिया कमाना तथा दुनिया की बातों में पड़ना, सामान्यतः प्रत्येक की, केवल कुछ लोगों को छोड़कर जिन्हें अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी है, प्राथ्मिकता है। वहाँ अहमदी नौजवान विनम्रता पूर्वक स्वेच्छा से सेवा कर रहे होते हैं। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम निरंतर इन कार्यकर्ताओं के लिए दुआएँ करते रहें कि अल्लाह तआला इनको जहाँ सुन्दर रंग में सेवा करने का वरदान देता रहे वहीं इनको सदैव प्रत्येक संकट, कठिनाई और तकलीफ़ से सुरक्षित रखे।

अब मैं पूर्व प्रथा की भांति, और आवश्यक भी है यह, मेहमानों की सेवा के विषय में कुछ बातें कहूँगा कार्यकर्ताओं के लिए। इस में कोई सन्देह नहीं कि समस्त कार्यकर्ता जैसा कि मैंने कहा अपने सम्पूर्ण प्रयास एंव ध्यान से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करते हैं परन्तु कुछ नए आने वाले तथा वे बच्चे जो पहली बार अपने सेवाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं और पुराने कार्यकर्ता जो हैं, उनको याद दिलाने के लिए भी आवश्यक है कि मेहमानों की सेवा के सम्बंध में इस्लाम की शिक्षा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण और आपके सच्चे ग़ुलाम के व्यक्तिगत व्यवहार और आपके उपदेशों को भी हम सामने रखें और दोहराते रहें ताकि मेहमान नवाज़ी (आतिथ्य) के उच्च से उच्चतम स्तर स्थापित कर सकें। अल्लाह तआला हमें मेहमान नवाज़ी का महत्व बताते हुए क़ुरआन करीम में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मेहमानों का वर्णन फ़रमाता है कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास मेहमान आए तो पहली और तुरन्त प्रतिक्रिया स्वागतम कहने तथा सलामती की दुआओं के बाद जो उन्होंने दिखाई वह यह थी कि उनके लिए तुरन्त खाना तय्यार कराया और फिर हज़रत

लूत के मेहमानों के लिए उनकी जो चिंता थी उसका वर्णन है कि मेरी क़ौम के लोग इन्हें कठिनाई न दें और मेहमानों की सुरक्षा की चिंता उनको हुई। अतः मेहमानों की तकलीफ़ की चिंता रहनी चाहिए और मेहमान की तकलीफ़, मेज़बान (आतिथेय) की बदनामी का कारण भी बनती है, यह भी इसके द्वारा सीख मिलती है। अतः यह बात याद रखनी चाहिए कि मेहमान की तकलीफ़ कोई ऐसी असाधारण चीज़ नहीं जिसको अनदेखा किया जाए। जिससे बल्कि किसी भी रंग में मेहमान को कोई तकलीफ़ पहुंचे तो यह मेज़बान के लिए लज्जा तथा बदनामी का कारण है। इस्लाम ने इसी लिए अतिथि सम्मान पर बहुत ज़ोर दिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो मूल्यवान विशेषताएँ हज़रत ख़दीजा रज़ीअल्लाहु अन्हा को नज़र आईं उनमें से एक विशेषता यह भी बयान की है कि ख़ुदा तआला किस प्रकार आपको नष्ट कर सकता है आप में तो मेहमानों के आदर की विशेषता भी चरम सीमा तक पहुंची हुई है और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में एक दो पाँच दस नहीं, सैंकड़ों बल्कि इससे भी अधिक उदाहरण हैं , ऐसी घटनाएँ हैं जो आपके अतिथि सम्मान एंव मेहमान नवाज़ी के उच्चतम स्तर को छू रहे हैं और फिर अपने सहाबा तथा अपनी उम्मत को भी आपने ये मार्ग-दर्शन दिया। सहाबा के भी ऐसे वृत्तांत हैं जिनको पढ़कर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार असाधारण क़ुरबानी करके वे मेहमान नवाज़ी करते थे और फिर अल्लाह तआला ज़ी उनकी मेहमान नवाज़ी में किस प्रकार बरकत डालता था तथा सराहना करता था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा था कि जब अधिक मेहमान आते तो हर एक को कुछ मेहमान दे देते और अपने लिए भी कुछ मेहमान रखते और फिर मेहमान नवाज़ी भी फ़रमाते स्वयं। एक सहाबी अब्दुल्लाह बिन तोहफ़ा कहते हैं कि मैं उन मेहमानों में से था एक अवसर पर, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिस्से में आए। आप हमें अपने साथ अपने घर ले गए और हज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि घर में कुछ खाने को है? उन्होंने निवेदन किया कि थोड़ा सा हरीरा है जो मैं ने आपके लिए रखा हुआ था। उस दिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ से भी थे, यह थोड़ा सा खाना आपकी अफ़तारी के लिए था। इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर हज़रत आयशा वह खाना बर्तन में डालकर ले आईं। आपने उसमें से थोड़ा सा लिया, मुंह लगाया अथवा सम्भवतः एक आध घूँट लियाया खाया थोड़ा सा और मेहमानों से कहा कि बिस्मिल्लाह पढ़कर खाएँ। अतः वे कहते हैं कि हम उसे इस प्रकार खा रहे थे कि देख नहीं रहे थे और सब का पेट भर गया। फिर आपने पूछा पीने को कुछ है तो वे पीने के लिए शरबत लाईं। आपने उसमें से थोड़ा सा पिया कि उसे देख नहीं रहे थे और फिर हमारी अच्छी प्रकार से पियास बुझ गई।

तो यह थी आपकी मेहमान नवाज़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे पहले इस लिए खाया था या चखा था बल्कि खाया नहीं कहना चाहिए दुआ के लिए ही मुंह से लगाया होगा कि वह आपकी दुआ की बरकत से सबके लिए पूरा हो जाए और वह पूरा हो गया। इसी प्रकार दुआ के द्वारा खाने में बरकत पड़ने तथा बढ़ने की अन्य असंख्य घटनाएँ हैं जिनसे पता चलता है कि किस प्रकार आप शेष बचे हुए खाने पर, थोड़े से खाने पर, और लोगों के लिए पूरा हो गया। फिर कई बार मेहमान कुछ कष्ट दायक स्थिति उत्पन्न कर देते हैं और मेज़बान का संतोष पूर्ण व्यवहार जो है, वह छूट जाता है, ऐसे परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं परन्तु ऐसी परिस्थितियों में भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कैसा अद्भुत तथा महान नमूना था। इसका परिणाम भी यह हुआ जब आपने अपना आचरण दिखाया कि सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम के जीवन में भी हमें मेहमानों के लिए क़ुरबानियों के नमूने नज़र आते हैं। वह घटना भी अपना उदाहरण आप है जिसको जब ज़ी पढ़ो नया आनन्द प्राप्त होता है कि जब एक सहाबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मेहमान के लिए अपने बच्चों को तो बहला फुसलाकर भूखा सुला देते हैं और स्वयं भी भूखा रहते हैं परन्तु मेहमानों को किसी प्रकार का आभास नहीं होने देते। अगले दिन जब ये अन्सारी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आपने हंसकर फ़रमाया कि इस युक्ति से मेहमान को खाना खिलाना ऐसा था कि ख़ुदा तआला ज़ी इस पर हंसा। अतः यह मेहमान नवाज़ी अल्लाह तआला को ऐसी पसन्द आई कि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी इसकी सूचना दी। ये सहाबा अपने आप पर बल्कि अपने बच्चों पर भी मेहमानों को प्राथ्मिकता देते थे। निस्संदेह ऐसे लोग अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करके दोनों लोकों के पुरस्कारों के उत्तराधिकारी बनते हैं। यह भावना सहाबा में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण को देखकर उत्पन्न हुई और आपकी शिक्षा से पैदा हुई।

एक रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला और

आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह अच्छी बात कहे या चुप रहे और जो व्यक्ति अल्लाह तआला तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह अपने पड़ौसी का सम्मान करे और जो व्यक्ति अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह अपने अतिथि का आदर करे। जिनके घरों में मेहमान आ रहे हैं उन्हें भी चाहिए कि रात को व्यर्थ की बातों में समय व्यतीत करने के बजाए अधिकाधिक समय इन दिनों में अल्लाह तआला और उसके रसूल के ज़िक्र में व्यतीत किया जाए, नेकी की बातें की जाएँ तथा नेकी की बातें सिखाई जाएँ और अपने व्यवहार एंव आचरण को उच्च स्तर तक पहुंचाएँ। रात को अथवा दिन के किसी भाग में भी जब कुछ समय मिले तो व्यर्थ बैठे हुए इधर उधर की गप्पें लगाने के बजाए दीन की बातें करें, इसका प्रभाव भी मेहमानों पर होगा। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम ने इस बात को समझा तो जहाँ उन्होंने मेहमान नवाज़ी का हक़, आए हुए प्रतिनिधि मंडल को, जिसका उदाहरण मैंने दिया है, रहने की उत्तम व्यवस्था करके उन्हें उत्तम खाना खिलाया वहीं उनकी रूहानी, दीनी तथा ज्ञान की आवश्यकता का हक़ अदा करने का भी प्रयास किया ताकि जब वे अपने घरों में जाएँ तो उत्त रंग में अपनों की भी तर्बियत कर सकें तथा सुन्दर रंग में इस्लाम का पैग़ाम भी अपने क्षेत्र के लोगों को पहुंचा सकें।

हमारे निज़ाम में भी तर्बियत और तबलीग़ के विभाग हैं जलसे के दिनों में उनकी टीमें भी बनती हैं गोष्ठियाँ भी रात को होती हैं कुछ विभिन्न क़ौमों के साथ, विभिन्न सम्प्रदायों के साथ। अतः यह रूहानी मायदा (आध्यात्मिक आहार) खिलाना भी अपनों तथा ग़ैरों को, यह डयूटी देने वालों का दायित्व है इसके प्रबन्ध में सुन्दर ढंग से किए जाएँ। अतः डयूटी वालों को, प्रत्येक को, इसको भी अपने सम्मुख रखना चाहिए कि यह बात याद रखें कि उनके अपनी भूमिका भी और उनकी बातें भी मेहमान नवाज़ी का अंग हैं, केवल सेवा करना ही नहीं। इसकी ओर भी इन दिनों में ध्यान देना चाहिए। इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें मेहमान नवाज़ी के कैसे नमूने दिखाए तथा किस प्रकार तर्बियत फ़रमाई। इसके कुछ उदाहरण भी पेश करता हूँ। मेहमान के आदर सत्कार की एक घटना है। एक बार क़ादियान में आए हुए एक मेहमान जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में भी थे, एक मुरीदी का सम्बंध भी था और इस मुरीदी की भावना के अंतर्गत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पाँव दबाने लगे। उसी बीच कमरे की खिड़की अथवा द्वार पर एक हिन्दू दोस्त ने आकर दसतक दी। यह सहाबी कहते हैं कि मैं उठकर खिड़की खोलने लगा परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बड़ी तेज़ी से उठे और जाकर दरवाज़ा खोल दिया और फ़रमाया कि आप हमारे मेहमान हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेहमान का आदर करना चाहिए। अब देखें, यहाँ दो स्थितियाँ हैं, एक मुरीद की जिसके अंतर्गत उसकी इच्छा के अनुसार उसको दबाने की अनुमति दे दी और दूसरी मेहमान के हक़ की अदायगी के लिए तुरन्त अपने आक़ा व अनुसरणीय के आदेश को सामने रखते हुए मेहमान का भी आदर किया और आने वाले का भी सम्मान करते हुए स्वयं उसके लिए द्वार खोला।

एक घटना हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब बयान फ़रमाते हैं कि एक अत्यंत सज्जन एंव निर्धन पुरुष, सेठी ग़ुलाम नबी साहब जो पिन्डी में दुकान किया करते थे उन्होंने हज़रत मियाँ साहब कहते हैं, मुझे बताया कि एक बार मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात के लिए क़ादियान आया। सरदी का मौसम था और कुछ वर्षा भी हो रही थी। शाम के समय क़ादियान पहुंचा। रात को जब मैं खाना खाकर लेट गया और काफ़ी रात बीत गई तो किसी ने मेरे कमरे के द्वार पर दसतक दी। मैंने उठकर दरवाज़ा खोला तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सामने खड़े देखा। एक हाथ में आपके गरम दूध का गिलास था दूसरे हाथ में लालटैन थी। मैं हुज़ूर को देखकर घबरा गया। हुज़ूर ने बड़े प्यार से फ़रमाया- कहीं से दूध आ गया था, मैंने सोचा आपको दे आऊँ। आप यह दूध पी लें, सम्भवतः आपको दूध की आदत होगी। सेठी साहब कहा करते थे कि मेरी आँखों में आँसू उमड़ आए, सुब्हानल्लाह क्या आचरण हैं। ख़ुदा का बर्गज़ीदा मसीह अपने सेवकों तक की सेवा में कितना आनन्द प्राप्त कर रहा है तथा कठिनाई उठा रहा है।

कुछ विशेष क्षेत्र के लोगों के लिए आप उनकी पसन्द के अनुसार खाना भी तय्यार कराते थे। यद्यपि जलसे के दिनों में प्रबन्धन की कठिनाई के कारण आप एक ही खाना तय्यार कराते थे ताकि अधिक कठिनाइयाँ न हों आगे वह खाना भी मिल जाए। लेकिन आजकल तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आपकी जमाअत व्यवस्था की दृष्टि से भी बड़ी निपुण हो चुकी है तथा वॉलन्टियर भी हैं साधन भी हैं तथा बड़ी बड़ी व्यवस्थाएँ सरलता पूर्वक कर सकती है इस लिए जलसे के प्रबन्ध के अंतर्गत भी एक तो सामान्य लंगर ख़ाने का प्रबन्ध होता है और दूसरे ग़ैर अज़-जमाअत तथा विशेष क्षेत्रों के लोगों अथवा रोगियों के लिए भी

खाना बनता है और इसमें कोई कठिनाई भी नहीं है और कोई बुराई भी नहीं है और न कोई आपत्ति होनी चाहिए। कुछ लोग अकारण इस प्रकार के सवाल उठा देते हैं कि क्यूँ अलग खाना पक रहा है? अमुक के लिए क्यूँ है? उन लोगों को भी साहस दिखाना चाहिए।

फिर एक बार कुछ लोगों को खाना नहीं मिला आपके ज़माने में और प्रबन्धकों की चूक के कारण उनका ध्यान नहीं रखा गया तो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस घटना की सूचना दी कि कुछ मेहमानों का ध्यान नहीं रखा गया। कुछ लोगों को खाना दे दिया जो अपने थे कुछ को नहीं दिया गया, उचित प्रकार से सेवा नहीं की गई। इस कारण से आपने लंगर ख़ाने में काम करने वालों को छः महीने के लिए निकालने का भी आदेश दिया, दंड भी दिया और फिर लंगर ख़ाने में भोजन की व्यवस्था अपने सामने कराई। अतः मेहमान नवाज़ी के विभाग को बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। कहीं भी, किसी को भी, किसी भी रंग में कठिनाई न हो। मेहमान नवाज़ी का विभाग, जलसे के आयोजन का एक महत्व पूर्ण विभाग है। अनेक व्यवस्थाएँ हैं जो मेहमान नवाज़ी के अंतर्गत ही हैं और यदि मेहमान नवाज़ी की व्यवस्था उचित हो तो शेष तो छोटी व्यवस्थाएँ हैं स्वयं ठीक जो जाती हैं। मेहमानों के लिए दवाइयों की व्यवस्था करना, यह जी मेहमान नवाज़ी है। इस प्रकार मैं समझता हूँ कि 80 प्रतिशत बल्कि इससे भी अधिक जलसे का प्रबन्ध अपने आप ठीक हो जाता है। अतः प्रत्येक कार्यकर्ता को याद रखना चाहिए कि केवल मेहमान नवाज़ी का काम उन्हीं का काम नहीं जिनके मेहमान नवाज़ी के बैज लगे हुए हैं बल्कि लगभग प्रत्येक विभाग ही मेहमान नवाज़ी का विभाग है तथा मेहमान के लिए सुविधा उपलब्ध करना, उसका सम्मान करना और आदर करना तथा उसे हर प्रकार की असुविधा से बचाना प्रत्येक कार्यकर्ता का कर्त्तव्य है। अल्लाह तआला समस्त कार्यकर्ताओं को सुन्दर रंग में यह दायित्व निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और जलसा जी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हर एक दृष्टि से बरकत वाला हो। आज 14 अगस्त भी है जो पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस है इसके विषय में भी दुआ की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। अल्लाह तआला पाकिस्तान का वास्तविक आज़ादी प्रदान करे और स्वार्थी लीडरों तथा लोभी धार्मिक नेताओं से देश को बचाए।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने कमाल आफ़ताब साहब पुत्र मुकर्रम रफ़ीक़ आफ़ताब साहब का वर्णन करते हुए उनकी सेवाओं तथा शुभ लक्षणों का वर्णन किया, जिनका 7 अगस्त 2015 को लेकोमिया के रोग के कारण 33 वर्ष की आयु में निधन हुआ था। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हज़रत सेठ अल्लाह दत्ता साहब रज़ी. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी के पड़पोते थे।

इसी प्रकार मुकर्रम मुहम्मद नईम आवान साहब पुत्र मुकर्रम मुशताक़ आवान साहब ऑफ़ जर्मनी, 36 साल की आयु में जर्मनी में रायन नदी में डूब कर इनका देहांत हुआ। साथ ही उनका 12 वर्ष का बेटा भी डूब गया, दोनों बाप बेटों का निधन हो गया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने मरहूम की सेवाओं तथा शुभ कार्यों का वर्णन फ़रमाया, जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और दुआ करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला उनके स्थान बुलन्द करे और उनके परिवार वालों को भी संतोष एंव साहस प्रदान करे तथा उनकी बच्चियों का भी स्वयं अभिभावक हो।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 14.08.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*